Vande Mataram 80/09/26

~~वंदे मातरम् और राष्ट्रीय भावना पर~~ विपक्षी राजनीति ~~[redacted]~~

वंदे मातरम् और राष्ट्रीय भावना को लेकर विपक्षी राजनीति

राष्ट्रगान 'वंदे मातरम' विवाद से ~~[redacted]~~ विवाद का विषय बन गया है, इसके सौ वर्षों की राष्ट्रीय भावना पर राजनीतिक दलों के विचारों का ~~[redacted]~~ कलेवर चढ़ा जा रहा है। इसी को भाजपा बीते राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठजोड़ (एनडीए) सरकार के जब से यह नियम ~~[redacted]~~ लागू किया है कि हर समारोह और आयोजन में 'वंदे मातरम' पूरा ही गाया जाए, इसी समय से इसको लेकर भाजपा और विपक्षी पार्टियों के बीच ~~[redacted]~~ लेकर विवाद ~~[redacted]~~ खड़ा हुआ है। विपक्षी ~~[redacted]~~ गठजोड़ का मुख्य और सबसे बड़ा घटक कांग्रेस शासित राज्य सरकारों इस बात पर खड़ी हैं कि राष्ट्रगान 'वंदे मातरम' और राष्ट्रगीत 'जन गण मन' जाने की पहले से चली आ रही परिपाटी में कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा। ~~[redacted]~~ कांग्रेस नेताओं ने साफ कर दिया है कि वे राष्ट्रगान ~~[redacted]~~ के पहले 'वंदे मातरम्, सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्' पर आधारित समारोह में जाने की संसद पर कायम हैं और इस संबंध में उन्हें भाजपा का निर्देश स्वीकार्य नहीं है।

'वंदे मातरम' की रचना के 150वें वर्ष के उपलक्ष में इंदिरा गृह मंत्रालय ने इस वर्ष अगस्त में निर्देश जारी किया कि ~~[redacted]~~ के सभी सरकारी कार्यालयों में 'जन गण मन' के पहले 'वंदे मातरम्' ~~[redacted]~~ और इस समारोह में दोनों ही राष्ट्रगीत साथ बजाया जाए। जुलाई में गृह मंत्रालय ने इस निर्देश को दोहराया था। प्रधानमंत्री ने भी अपने संबोधन में इसका जिक्र किया था। ~~[redacted]~~ भाजपा के सांसदों के इस कदम को राष्ट्रीय भावना के प्रतीक के रूप में देखा और ~~[redacted]~~ वहीं मानने वाले विपक्षी दलों पर राष्ट्रगान के अपमान का आरोप लगाया।

महान बंगाली उपन्यासकार बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की कालजयी कृति 'आनंद मठ' से ली गई 'वंदे मातरम्' गान के अभी 150 वर्ष पूरे होने की खुशी में आयोजनों के आयोजन के लिए, [illegible] केंद्रीय गृह मंत्रालय के निर्देश, जारी किए जाने का असली मकसद आगामी मई में निर्धारित पश्चिम बंगाल चुनाव था। प्रधानमंत्री और केंद्रीय मंत्रियों के इस बार और बार इस बात का गर्व-गान किया कि कांग्रेस तथा बंगाल के नेताओं ने [illegible] 'वंदे मातरम्' को उचित गौरव, सम्मान प्रदान नहीं किया। इसके महान रचयिता बंकिम बाबू की भी उपेक्षा की गयी। इसीलिए 'वंदे मातरम्' गान के 150वें वर्ष के पवित्र अवसर पर पूरा देश गाए जाने का निर्णय किया गया। वैसे देशवासी भी इस गीत के प्रति श्रद्धेय भावना को समझें, जरूरी है कि इसके लिए उपयुक्त राजनीतिक समय बंगाल विधानसभा चुनाव तय हुआ। पश्चिम बंगाल के कालजयी साहित्य को भी ध्यान में रखना था, क्योंकि वहां बड़ी संख्या में बंगलाभाषी मतदाता हैं। बंकिम बाबू 'वंदे मातरम्' की वजह से बंगालियों के [illegible] साथ-साथ श्रद्धेय भावना के भी प्रतीक हैं।

इसके औपनिवेशिक दौर से लगातार गया इतिहास के क्रमवार विवरण सहित वर्ष 2025 में देशभर का प्रीतिकीर्ण अवसर शुरू होने के पहले [illegible] 07 नवंबर को [illegible] 'वंदे मातरम्' गान की 150वीं वर्षगांठ पर स्मरणार्थी आयोजन एक साथ तय किया कि 07 नवंबर, 2026 तक पूरे देश के केंद्र सरकार ने उत्सव किया। देशभर में [illegible] 150 वीं वर्षगांठ पर वर्षों स्थान भी इसी कार्यक्रम का हिस्सा था। [illegible] वर्षों वर्ष [illegible] वर्षों वर्षों [illegible] वर्षों वर्षों [illegible] वर्षों वर्षों

[redacted] 'वंदे मातरम्' [redacted] में निहित

देशभक्ति की भावना के बीज में बंकिम बाबू [redacted] की जगह बंकिम दा'
प्रधानमंत्री ने कहा
(मेरे प्रणव मुखर्जी दा प्रणव दा कहते थे) निहित आदर्श पर बंगाल
के सांसदों ने कड़ी आपत्ति की। कुछ ने इस बात को लेकर
प्रधानमंत्री का बंकिम बंद्य अध्याय के उच्चारण पर टोका।
बोल पड़े हुए थे। कोलकाता के पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री
ममता बनर्जी ने भी तीखी प्रतिक्रिया दी कि प्रधानमंत्री को ना
मालूम है कि बंगला साहित्य और संस्कृति की बात हो रही है।

बहरहाल, मार्च 2026 में इंदिरा गांधी मंत्रालय ने 'वंदे मातरम्'
गाए जाने के सम्बन्ध में लिखे 'एग्जीक्यूटिव प्रोटोकॉल' के दस्तावेज
जारी कर दिया। इसमें दस्तावेज 'वंदे मातरम्' के सभी पद पूरे
के पूरे सभी समारोहों में और स्कूलों में [redacted] गाया
जाना अनिवार्य कर दिया गया। इसी समय से राजनीति विवाद
की शुरुआत हुई। कांग्रेस नेतृत्व मल्लिकार्जुन खड़गे, तो इस में विपक्ष
के नेता राहुल गांधी सभी कांग्रेसी नेताओं और कांग्रेस शासित राज्य
सरकारों ने [redacted] उनका कहना था कि
1937 में कांग्रेस के अधिवेशन में रेल के गाने इस तरह
सेनानियों ने रेल [redacted] के विविध धर्मों और संस्कृतियों का ख्याल
रखते 'वंदे मातरम्' के सिर्फ दो पद गाए जाने का निर्णय किया था।
अभी तक दो पद्य चलती थी, भाजपा सरकार अपनी
नीतियों थोपकर [redacted] उन महान नेताओं और उनके प्रति देशवासियों
की श्रद्धा का अपमान कर रही है।

गृह मंत्रालय के 1937 के कांग्रेस अधिवेशन के महात्मा गांधी अबुल कलाम आजाद, सुभाषचन्द्र बोस, राजेन्द्र प्रसाद की मौजूदगी में पास 'वंदे मातरम्' के सिर्फ दो अंतरे गाने के प्रस्ताव को स्वीकृति।

जनवरी, 2026 में [redacted] पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव। चुनाव में जिन मुद्दों से भाजपा ने जीत हासिल की है पश्चिम बंगाल में पहली बार डबल इंजन सरकार, इनमें से एक था 'वंदे मातरम्' के प्रति [redacted] राष्ट्रीय गायन। [redacted] लगातार भी एक था। [redacted] भाजपा ने पहली बार सत्ता में आयी। इससे उत्साहित एवं [redacted] ने सरकार के संसद में आनंदमठ में गुलाई में अपने प्रस्ताव को लेकर जानकारी के लिए 24 जुलाई, 2026 को राष्ट्रीय सम्मान का अपमान होने (संशोधन) विधेयक, 2026 सदन सभा में पेश किया। इस पर चर्चा पहले ही संसद में हो चुकी थी। 24 से 30 जुलाई तक [redacted] संसद में आनंदमठ बीट-पूजी [redacted] प्रस्तावित लोक सभा में अधिकांश 30 जुलाई को विधेयक पास हो गया। इस विधेयक में 1937 के एक ही बैठक में संशोधन [redacted] राष्ट्रगान और [redacted] राष्ट्रगीत के सम्मान पर कड़े रुख का प्रावधान किया गया। किसी संसद सदस्यों ने 24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में डा. राजेन्द्र प्रसाद का बयान किया, जिसमें उन्होंने घोषणा किया कि 1937 में [redacted] पास 'वंदे मातरम्' गाने का प्रस्ताव स्वीकार किया जाता है। इसके 'वंदे मातरम्' को बराबर दर्जा प्राप्त हो गयी।

स्वतंत्रता दिवस रविवार था, इसलिए अगले दिन सोमवार को छुट्टी घोषित कर दी गई थी। इससे लोगों को लगातार दो दिन 'वंदे मातरम्' के सभी छंद [redacted] सुने जाने का दुर्लभ अवसर मिल गया। इसके बाद से लगातार यह मांग उठती रही कि 'वंदे मातरम्' को राष्ट्रगान (राष्ट्रगीत) के बराबर सम्मान मिलना चाहिए।

15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर दूरदर्शन ने राष्ट्रीय कार्यक्रम के अभिभाषण से पहले और उसके बाद 'वंदे मातरम्' के सभी छंदों का सजीव प्रसारण [redacted] किया गया। लगभग आठ घंटों में पहली बार दूरदर्शन या दूरदर्शन के नाम पर संचालित स्वतंत्रता दिवस समारोह में 'वंदे मातरम्' के सभी छंदों का गायन हुआ।

15 अगस्त को लालकिला प्रसारण में यही नामी पटेलपुर की गयी। रेल दीजनगर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन पर [redacted] दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किए जाने [redacted] और दूरदर्शन 'जनगणमन' गाए जाने से पहले 'वंदे मातरम्' का संपूर्ण गायन देखा सुना।

इसके बाद से लगातार यह मांग बढ़ती ही जा रही थी। कांग्रेस के बाहर से तेज अपना किया था। [redacted] दिल्ली में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के हेडक्वार्टर में अंतरिम प्रसारण के तहत 15 अगस्त को ही [redacted] इस मीडिया ब्रीफिंग में [redacted] सोनिया गांधी 'वंदे मातरम्' गायन के समय पार्टी कार्यकर्ताओं को [redacted] सावधान की मुद्रा में खड़े [redacted] निर्देश दिया। खबर प्रसारित हुई कि सोनिया गांधी ने दो बार 'वंदे मातरम्' गायन के दौरान सावधान की मुद्रा में खड़े रहने का निर्देश दिया।

कांग्रेस के मीडिया सेल ने दो सफाई दी। पहले कहा कि बुजुर्ग 84 वर्षीय मल्लिकार्जुन खड़गे को सभापति के लिए कांग्रेस नेता सोनिया गांधी के अनेक वर्गों के कठपुतली थी। दूसरा ये कि 'वंदे मातरम्' के विवाद से वंदे भारत ट्रेन के अपने स्टैंड पर कांग्रेस अडिग है। कि खड़गे ने कहा कि कांग्रेस महात्मा गांधी, सरदार पटेल और बाद में विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण की नीति का अनुसरण कर रही है।

इससे पहले 17 अगस्त को गोवा में आयोजित कांग्रेस प्रदेश कार्य समिति की बैठक में 'वंदे मातरम्' के लिए दो वंदे भारत ट्रेन के स्टेशन पर ठहराव का प्रस्ताव पास हुआ। गोवा विधान सभा का शीत सत्र होने जा रहा है। 'वंदे मातरम्' का विवाद इसी बात को लेकर है कि इसके कुछ ही दो छंदों से बाइबल की तरह छंद में देवियों की महिमा का वर्णन है। 1896 में कलकत्ता में ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में सबसे पहली बार गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर ने 'वंदे मातरम्' को पूरा संगीतमय पाठ किया तो इसे राष्ट्रगान के रूप में अपनाया गया। लेकिन 1905 में बंगाल विभाजन के समय ब्रिटिश कांग्रेस के बैनर तले गैर-हिंदू मुस्लिम संगठनों के विरोध के कारण 1937 में कांग्रेस नेताओं के वंदे गाए जाने का निर्णय लिया।

अब देखिए कि 17 अगस्त को कांग्रेस की गोवा बैठक के जवाब में 22 अगस्त को भोपाल में भाजपा की बैठक में क्या हुआ।

भाजपा-नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की अध्यक्षता में [redacted]

हुई इस बैठक में 10 सूत्री

प्रस्ताव पास हुआ, जिसमें [redacted] 'मेरे सपनों का भारत' को घर-घर तक पहुंचाने के लिए देशभर में जन अभियान चलाने का [redacted] गया और कांग्रेस [redacted] से देश को मुक्त कराने की शपथ ली गयी।

भाजपा की जीत से कर्नाटक की कांग्रेस सरकार के [redacted] की बैठक में [redacted] 'मेरे सपनों के भारत' के बिंदुओं को घर-घर तक पहुंचाने का [redacted] और 02 अक्टूबर को [redacted] से शुरू होने वाली पदयात्रा के जरिए इन बिंदुओं को जनता के बीच ले जाने का फैसला किया। [redacted] के इस फैसले की [redacted] ने [redacted] की। [redacted] ने कहा कि 'हम अपने देश के इस [redacted] को बर्दाश्त नहीं करेंगे, हम 'मेरे सपनों का भारत' पूरा करेंगे।' [redacted] ने कहा कि हम कर्नाटक में 2023 में होने वाले विधानसभा चुनाव में [redacted] करेंगे। [redacted] ने दावा किया कि कर्नाटक में 2023 में चुनाव की घोषणा होने से पहले ही कर्नाटक के 224 विधानसभा क्षेत्रों में 'मेरे सपनों का भारत' पूरा करने की शपथ ली जाएगी। [redacted] ने कहा कि 'मेरे सपनों का भारत' के जरिए घर-घर जाकर लोगों को [redacted] के बारे में बताया जाएगा। इसके बाद [redacted] प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन 17 सितंबर से शुरू होने वाले कार्यक्रम एक महीने तक चलेंगे।

भाजपा अपने सभी सांसद से राष्ट्रीय भावना [redacted] और देशभक्ति
के मुद्दे पार्टी के प्रति जनता का समर्थन को बढ़ावा देनेवाली
भावना को प्रोत्साहन देती है। उसका, इसलिए, अभी [redacted] सांसदों
[redacted] विधानसभा चुनाव में [redacted] गृहमंत्री [redacted] आदीवासी क्षेत्र में
नारा 'वंदे मातरम्' की 150 वीं [redacted] तथा चलनेवाले [redacted] वर्ष इसी
के समानांतर चला रहे हैं, जो 07 नवंबर तक चलेगा। [redacted]
[redacted] अभियान से भारतरत्न [redacted] का संबंध भी है।
'वंदे मातरम्' के [redacted] अभियान में
मुद्दे [redacted] बतलाया जा रहा है। 14 सितंबर को [redacted]
में मुंबई में [redacted] मंत्री अमित शाह ने [redacted]
समारोह की थीम 'वंदे मातरम्' पूर्ण गायन के साथ रखा कि भाजपा
ने 80 वर्ष पार [redacted] गौरव लौटाया तो और सम्मान
करती है धारा-370 [redacted] आदि ने [redacted]
[redacted] 70 वर्ष से [redacted]

झारखंड [redacted] में [redacted] कांग्रेस [redacted]
'वंदे मातरम्' [redacted] की तैयारी के समय की [redacted]
[redacted] झारखंड कांग्रेस विधायक दल नेता
[redacted] उपमंत्री हेमंत सोरेन को पत्र लिखकर कहा कि
कर्नाटक और केरल की तरह झारखंड में भी [redacted]
कार्यक्रमों, सभाओं, शिक्षा संस्थानों में 'वंदे मातरम्' का विधिवत गायन
गाया जाए। [redacted] इसके [redacted] संस्कृति और
कानून मंत्री ने [redacted] वंदे मातरम् के खिलाफ कार्रवाई
की चेतावनी दी थी।

सर्वोदय की भावना का ध्यान रखते हुए बालीवुड अभिनेता अनंत नाग ने राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय [redacted] एवं हुमा व्यवहारिक सम्मान को मुख्यरूप से भी भावनात्मक राजनीति क्षेत्र से लगाते हैं [redacted] रिवंगा बंगाली अभिनेत्र उत्तम कुमार के प्रति उनका भी उसी दृष्टिकोण है।

भारत-आस्ट्रेलिया टी-20 मुकाबले के पहले 17 दिसंबर को 'जन गण मन' के बाद 'वंदे मातरम्' [redacted] बजाया जाना दिखेगा। अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन में पहली बार ऐसा होने जा रहा है।

[redacted] पूर्व सम्राट इटली में 'वंदे मातरम्' को नयी राजनीति देखने को मिली, जहां अय- उतारा जाने के पहले कुछ सेकेंड की गाड़ी आकाशवाणी केंद्रों से सारे 'वंदे मातरम्' के बोल भी नहीं गाए जाने को लेकर विवाद हुआ। मुख्यमंत्री हुमा अबुल्ला के 'वंदे मातरम्' पूरा गाए जाने की बजाय [redacted] हुए मुद्दे पर कांग्रेस ने आलोचना की। 07 दिसंबर को बेंगलुरु में आयोजित पहले अंतरराष्ट्रीय दिवस समारोह में 'वंदे मातरम्' के मूल छह छंद बजाने के सम्राट इटली सरकार कांग्रेस बयान तारिक अमीर खान ने विरोध किया। उस समारोह में मुख्यमंत्री हुमा अबुल्ला की सेवानत कांग्रेस सरकार आठ अबुल्ला सोनी मोगुर को अक्टूबर, 2024 में सम्राट इटली में कांग्रेस से सारी सीटें नहीं मिली तारिक सेवानत कांग्रेस के सदस्य में शामिल होने की अटकलें थे। उसके बाद से दोनों दलों के रिश्ते अच्छे नहीं हैं। हुमा अबुल्ला [redacted] सम्राट इटली सरकार को समर्थन पाने के लिए कांग्रेस के दरवाजे नहीं खटखटाते।

→ 10 अप्रैल-अप्रैल अप्रैल में अप्रैल गई में असम, बंगाल
के साथ पुद्दुचेरी तमिलनाडु [redacted]
विधान सभा चुनाव में
भाजपा को सत्ता प्राप्त नहीं हुई। केरल में सत्ता में वामपंथी गठबंधन
ने दोबारा से प्रवेश किया। तमिलनाडु में अकेली बड़ी पार्टी
के रूप में द्रमुक के नेतृत्व में मुख्यमंत्री श्री-एम॰के॰ स्टालिन ने
कांग्रेस को सहयोगी में शामिल किया। मुख्यमंत्री ने विधान सभा
के अपने पहले ही मुलाकात अपने के साथ तमिल परंपरा
गीत और समापन 'जन गण मन' [redacted] गाया गया।
'वंदे मातरम्'
के दो ही छंद गाए गए।